



???????? ?????

11 Dec 1997

12:05 PM

Patan

Model: Web-MyKundli

Order No: 121692101

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: पुल्लिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 11/12/1997  
दिन \_\_\_\_\_: गुरुवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 12:05:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 14:06:02 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Patan  
राज्य \_\_\_\_\_: Bihar  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 24:14:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 84:12:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: 00:06:48 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 12:11:48 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: 00:06:47 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 17:31:52 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 06:26:35 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 17:06:22 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 10:39:47 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: दक्षिणायन  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: दक्षिण  
ऋतु \_\_\_\_\_: हेमन्त  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 25:25:36 वृश्चिक  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 26:40:12 कुम्भ

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: कुम्भ - शनि  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: मेष - मंगल  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: भरणी - 2  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: शुक  
योग \_\_\_\_\_: शिव  
करण \_\_\_\_\_: बालव  
गण \_\_\_\_\_: मनुष्य  
योनि \_\_\_\_\_: गज  
नाड़ी \_\_\_\_\_: मध्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: क्षत्रिय  
वश्य \_\_\_\_\_: चतुष्पाद  
वर्ग \_\_\_\_\_: मृग  
युँजा \_\_\_\_\_: पूर्व  
हंसक \_\_\_\_\_: अग्नि  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: लू-लूनेश  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: ताम्र - स्वर्ण  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: धनु

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

| कैलेंडर    | वर्ष          | मास        | तिथि/प्रविष्टे |
|------------|---------------|------------|----------------|
| राष्ट्रीय  | शक : 1919     | मार्गशीर्ष | 20             |
| पंजाबी     | संवत : 2054   | मार्गशीर्ष | 26             |
| बंगाली     | सन् : 1404    | मार्गशीर्ष | 25             |
| तमिल       | संवत : 2054   | कार्तिक    | 26             |
| केरल       | कोल्लम : 1173 | वृश्चिक    | 26             |
| नेपाली     | संवत : 2054   | मार्गशीर्ष | 26             |
| चैत्रादि   | संवत : 2054   | मार्गशीर्ष | शुक्ल 12       |
| कार्तिकादि | संवत : 2054   | मार्गशीर्ष | शुक्ल 12       |

### पंचांग

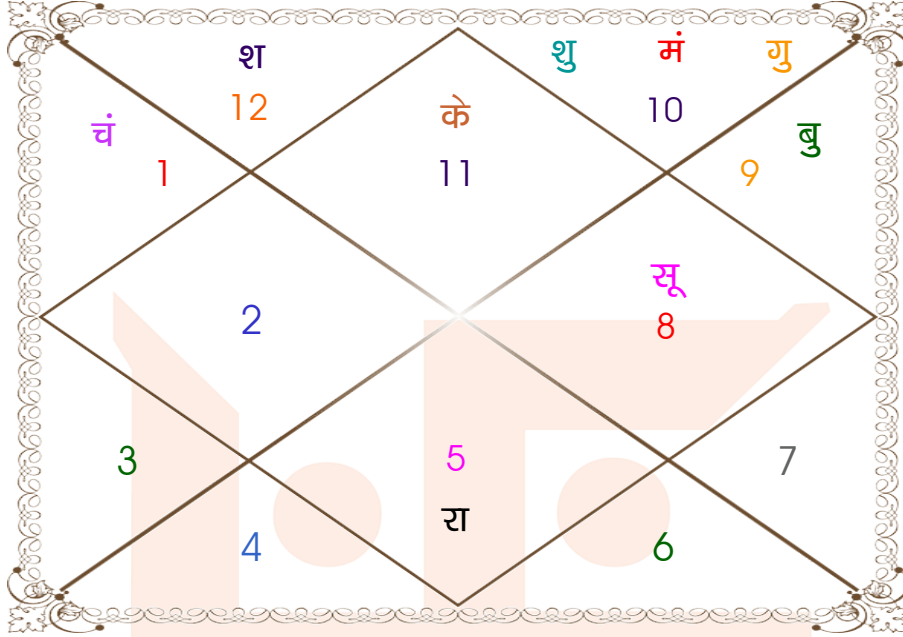
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 12  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 13:54:54  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 12  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : भरणी  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 25:59:16 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : भरणी  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : परिघ  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 11:16:58 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : शिव  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : बालव  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 13:54:54 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : बालव  
भयात \_\_\_\_\_ : 21:22:24  
भभोग \_\_\_\_\_ : 56:08:04  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : शुक्र 12 वर्ष 4 मा 15 दि

### घात चक्र

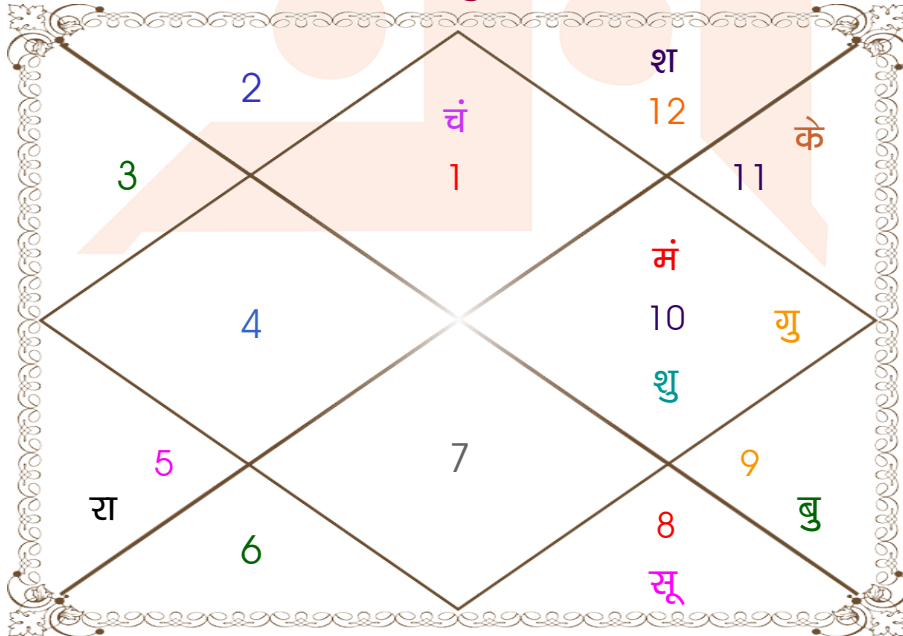
मास \_\_\_\_\_ : कार्तिक  
तिथि \_\_\_\_\_ : 1-6-11  
दिन \_\_\_\_\_ : रविवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : मघा  
योग \_\_\_\_\_ : विष्कुम्भ  
करण \_\_\_\_\_ : बव  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 1  
वर्ग \_\_\_\_\_ : सिंह  
लग्न \_\_\_\_\_ : मेष  
सूर्य \_\_\_\_\_ : कर्क  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : मेष  
मंगल \_\_\_\_\_ : सिंह  
बुध \_\_\_\_\_ : वृष  
गुरु \_\_\_\_\_ : कन्या  
शुक्र \_\_\_\_\_ : तुला  
शनि \_\_\_\_\_ : मिथुन  
राहु \_\_\_\_\_ : वृश्चिक

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



## लग्न कुण्डली और दशा

### लग्न कुंडली

|                |    |  |    |
|----------------|----|--|----|
| श              | चं |  |    |
| के<br>ल        |    |  |    |
| शु<br>मं<br>गु |    |  | रा |
| बु             | सू |  |    |

### लग्न कुंडली

|    |    |   |                |
|----|----|---|----------------|
|    | चं | श | के<br>ल        |
|    |    |   | शु<br>मं<br>गु |
| रा |    |   | बु             |
|    |    |   | सू             |

विंशोत्तरी  
शुक्र 12वर्ष 4मा 15दि  
शुक्र

11/12/1997

28/04/2110

|        |            |
|--------|------------|
| शुक्र  | 27/04/2010 |
| सूर्य  | 27/04/2016 |
| चन्द्र | 27/04/2026 |
| मंगल   | 27/04/2033 |
| राहु   | 28/04/2051 |
| गुरु   | 28/04/2067 |
| शनि    | 27/04/2086 |
| बुध    | 29/04/2103 |
| केतु   | 28/04/2110 |

योगिनी  
भद्रिका 3वर्ष 1मा 3दि  
धान्या

14/01/2025

15/01/2028

|         |            |
|---------|------------|
| धान्या  | 15/04/2025 |
| भ्रामरी | 15/08/2025 |
| भद्रिका | 14/01/2026 |
| उल्का   | 16/07/2026 |
| सिद्धा  | 14/02/2027 |
| संकटा   | 16/10/2027 |
| मंगला   | 15/11/2027 |
| पिंगला  | 15/01/2028 |

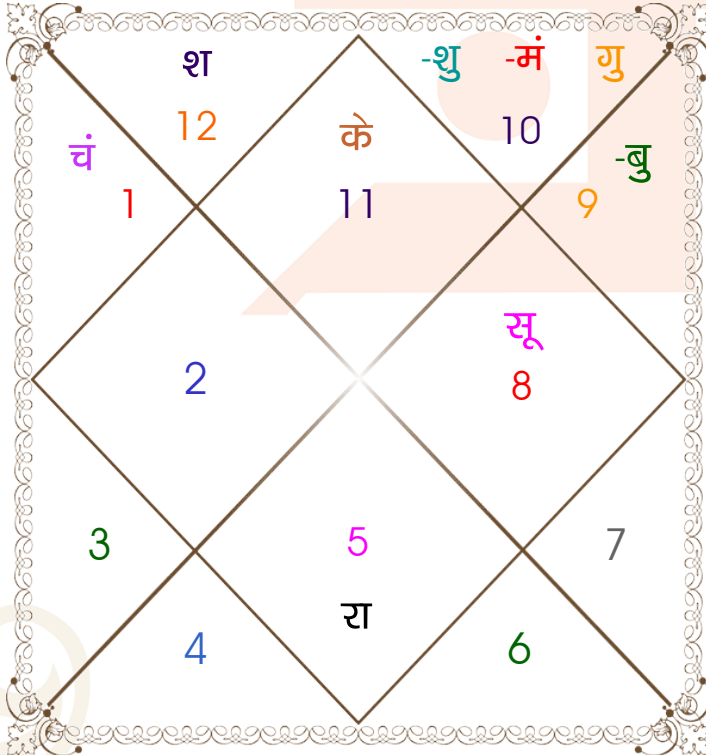
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

| ग्रह    | व | अ | राशि   | अंश      | गति       | नक्षत्र     | पद | नं. | रा    | न     | अं.   | स्थिति     |
|---------|---|---|--------|----------|-----------|-------------|----|-----|-------|-------|-------|------------|
| लग्न    |   |   | कुंभ   | 26:40:12 | 485:34:45 | पू०भाद्रपद  | 3  | 25  | शनि   | गुरु  | शुक्र | ---        |
| सूर्य   |   |   | वृश्चि | 25:25:36 | 01:00:58  | ज्येष्ठा    | 3  | 18  | मंगल  | बुध   | राहु  | मित्र राशि |
| चंद्र   |   |   | मेष    | 18:24:58 | 14:15:39  | भरणी        | 2  | 2   | मंगल  | शुक्र | राहु  | सम राशि    |
| मंगल    |   |   | मक     | 00:42:52 | 00:46:40  | उत्तराषाढ़ा | 2  | 21  | शनि   | सूर्य | राहु  | उच्च राशि  |
| बुध     | व |   | धनु    | 08:22:34 | 00:39:53  | मूल         | 3  | 19  | गुरु  | केतु  | गुरु  | सम राशि    |
| गुरु    |   |   | मक     | 24:25:28 | 00:10:32  | धनिष्ठा     | 1  | 23  | शनि   | मंगल  | राहु  | नीच राशि   |
| शुक्र   |   |   | मक     | 05:42:07 | 00:31:28  | उत्तराषाढ़ा | 3  | 21  | शनि   | सूर्य | बुध   | मित्र राशि |
| शनि     | व |   | मीन    | 19:43:54 | 00:00:34  | रेवती       | 1  | 27  | गुरु  | बुध   | शुक्र | सम राशि    |
| राहु    | व |   | सिंह   | 21:03:21 | 00:08:24  | पू०फाल्गुनी | 3  | 11  | सूर्य | शुक्र | गुरु  | शत्रु राशि |
| केतु    | व |   | कुंभ   | 21:03:21 | 00:08:24  | पू०भाद्रपद  | 1  | 25  | शनि   | गुरु  | गुरु  | शत्रु राशि |
| हर्ष    |   |   | मक     | 12:16:08 | 00:02:39  | श्रवण       | 1  | 22  | शनि   | चंद्र | राहु  | ---        |
| नेप     |   |   | मक     | 04:24:39 | 00:01:52  | उत्तराषाढ़ा | 3  | 21  | शनि   | सूर्य | शनि   | ---        |
| प्लूटो  |   |   | वृश्चि | 12:10:33 | 00:02:19  | अनुराधा     | 3  | 17  | मंगल  | शनि   | मंगल  | ---        |
| दशम भाव |   |   | वृश्चि | 29:42:54 | --        | ज्येष्ठा    | -- | 18  | मंगल  | बुध   | शनि   | --         |

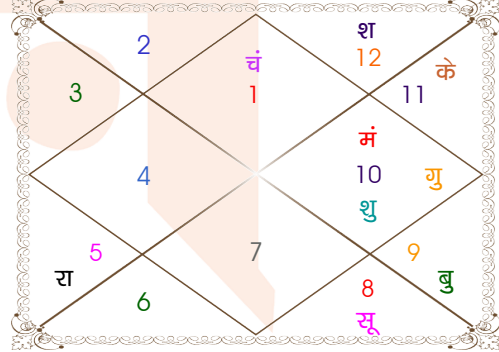
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:49:37

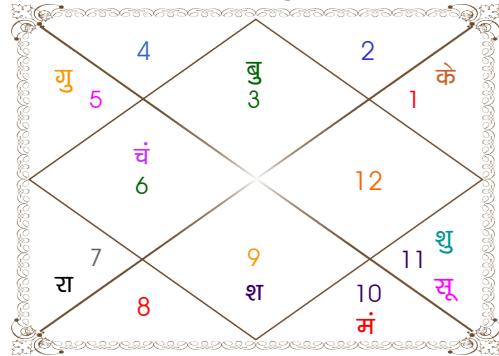
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

| भाव | भाव संधि         | भाव मध्य         |
|-----|------------------|------------------|
| 1   | कुम्भ 12:10:39   | कुम्भ 26:40:12   |
| 2   | मीन 12:10:39     | मीन 27:41:06     |
| 3   | मेष 13:11:33     | मेष 28:42:00     |
| 4   | वृष 14:12:27     | वृष 29:42:54     |
| 5   | मिथुन 14:12:27   | मिथुन 28:42:00   |
| 6   | कर्क 13:11:33    | कर्क 27:41:06    |
| 7   | सिंह 12:10:39    | सिंह 26:40:12    |
| 8   | कन्या 12:10:39   | कन्या 27:41:06   |
| 9   | तुला 13:11:33    | तुला 28:42:00    |
| 10  | वृश्चिक 14:12:27 | वृश्चिक 29:42:54 |
| 11  | धनु 14:12:27     | धनु 28:42:00     |
| 12  | मकर 13:11:33     | मकर 27:41:06     |

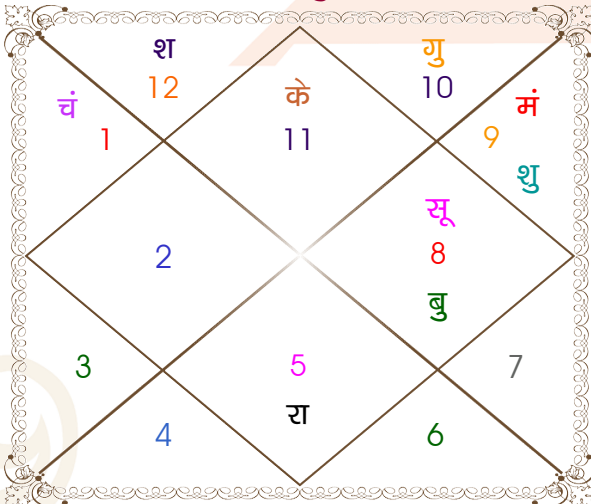
### निरयण भाव चलित

| भाव | राशि    | अंश      |
|-----|---------|----------|
| 1   | कुम्भ   | 26:40:12 |
| 2   | मेष     | 04:27:10 |
| 3   | वृष     | 04:29:34 |
| 4   | वृष     | 29:42:54 |
| 5   | मिथुन   | 24:06:25 |
| 6   | कर्क    | 21:40:12 |
| 7   | सिंह    | 26:40:12 |
| 8   | तुला    | 04:27:10 |
| 9   | वृश्चिक | 04:29:34 |
| 10  | वृश्चिक | 29:42:54 |
| 11  | धनु     | 24:06:25 |
| 12  | मकर     | 21:40:12 |

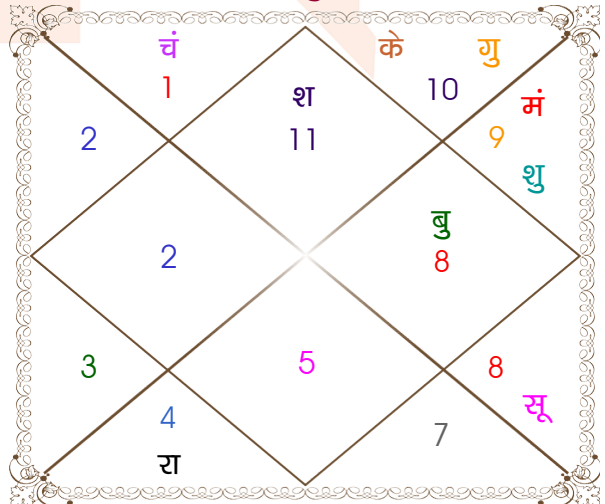
### तारा चक्र

| जन्म       | सम्पत      | विपत   | क्षेम   | प्रत्यारि | साधक          | वध        | मित्र    | अतिमित्र |
|------------|------------|--------|---------|-----------|---------------|-----------|----------|----------|
| भरणी       | कृतिका     | रोहिणी | मृगशिरा | आर्द्रा   | पुनर्वसु      | पुष्य     | आश्लेषा  | मघा      |
| पूर्वाषाढा | उत्तराषाढा | श्रवण  | चित्रा  | स्वाति    | विशाखा        | अनुराधा   | ज्येष्ठा | मूल      |
| पूर्वाषाढा | उत्तराषाढा | श्रवण  | धनिष्ठा | शतभिषा    | पूर्वाभाद्रपद | उ०भाद्रपद | रेवती    | अश्विनी  |

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 12 वर्ष 4 मास 15 दिन

| शुक्र 20 वर्ष   | सूर्य 6 वर्ष     | चंद्र 10 वर्ष    | मंगल 7 वर्ष      | राहु 18 वर्ष     |
|-----------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 11/12/1997      | 27/04/2010       | 27/04/2016       | 27/04/2026       | 27/04/2033       |
| 27/04/2010      | 27/04/2016       | 27/04/2026       | 27/04/2033       | 28/04/2051       |
| 00/00/0000      | सूर्य 15/08/2010 | चंद्र 25/02/2017 | मंगल 23/09/2026  | राहु 08/01/2036  |
| 00/00/0000      | चंद्र 13/02/2011 | मंगल 26/09/2017  | राहु 12/10/2027  | गुरु 03/06/2038  |
| 00/00/0000      | मंगल 21/06/2011  | राहु 28/03/2019  | गुरु 17/09/2028  | शनि 09/04/2041   |
| 11/12/1997      | राहु 15/05/2012  | गुरु 27/07/2020  | शनि 27/10/2029   | बुध 27/10/2043   |
| राहु 27/06/2000 | गुरु 03/03/2013  | शनि 25/02/2022   | बुध 24/10/2030   | केतु 14/11/2044  |
| गुरु 26/02/2003 | शनि 13/02/2014   | बुध 28/07/2023   | केतु 22/03/2031  | शुक्र 14/11/2047 |
| शनि 27/04/2006  | बुध 21/12/2014   | केतु 26/02/2024  | शुक्र 21/05/2032 | सूर्य 08/10/2048 |
| बुध 25/02/2009  | केतु 28/04/2015  | शुक्र 27/10/2025 | सूर्य 26/09/2032 | चंद्र 09/04/2050 |
| केतु 27/04/2010 | शुक्र 27/04/2016 | सूर्य 27/04/2026 | चंद्र 27/04/2033 | मंगल 28/04/2051  |

| गुरु 16 वर्ष     | शनि 19 वर्ष      | बुध 17 वर्ष      | केतु 7 वर्ष      | शुक्र 20 वर्ष    |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 28/04/2051       | 28/04/2067       | 27/04/2086       | 29/04/2103       | 28/04/2110       |
| 28/04/2067       | 27/04/2086       | 29/04/2103       | 28/04/2110       | 00/00/0000       |
| गुरु 15/06/2053  | शनि 30/04/2070   | बुध 23/09/2088   | केतु 25/09/2103  | शुक्र 28/08/2113 |
| शनि 27/12/2055   | बुध 07/01/2073   | केतु 20/09/2089  | शुक्र 24/11/2104 | सूर्य 28/08/2114 |
| बुध 03/04/2058   | केतु 16/02/2074  | शुक्र 21/07/2092 | सूर्य 01/04/2105 | चंद्र 28/04/2116 |
| केतु 10/03/2059  | शुक्र 18/04/2077 | सूर्य 27/05/2093 | चंद्र 31/10/2105 | मंगल 28/06/2117  |
| शुक्र 08/11/2061 | सूर्य 31/03/2078 | चंद्र 27/10/2094 | मंगल 29/03/2106  | राहु 12/12/2117  |
| सूर्य 27/08/2062 | चंद्र 30/10/2079 | मंगल 24/10/2095  | राहु 16/04/2107  | 00/00/0000       |
| चंद्र 27/12/2063 | मंगल 08/12/2080  | राहु 12/05/2098  | गुरु 22/03/2108  | 00/00/0000       |
| मंगल 02/12/2064  | राहु 15/10/2083  | गुरु 18/08/2100  | शनि 01/05/2109   | 00/00/0000       |
| राहु 28/04/2067  | गुरु 27/04/2086  | शनि 29/04/2103   | बुध 28/04/2110   | 00/00/0000       |

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 12 वर्ष 4 मा 19 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

|                      |                    |                     |                     |                     |
|----------------------|--------------------|---------------------|---------------------|---------------------|
| <b>चंद्र - सूर्य</b> | <b>मंगल - मंगल</b> | <b>मंगल - राहु</b>  | <b>मंगल - गुरु</b>  | <b>मंगल - शनि</b>   |
| <b>27/10/2025</b>    | <b>27/04/2026</b>  | <b>23/09/2026</b>   | <b>12/10/2027</b>   | <b>17/09/2028</b>   |
| <b>27/04/2026</b>    | <b>23/09/2026</b>  | <b>12/10/2027</b>   | <b>17/09/2028</b>   | <b>27/10/2029</b>   |
| सूर्य 05/11/2025     | मंगल 06/05/2026    | राहु 20/11/2026     | गुरु 26/11/2027     | शनि 20/11/2028      |
| चंद्र 20/11/2025     | राहु 28/05/2026    | गुरु 10/01/2027     | शनि 19/01/2028      | बुध 16/01/2029      |
| मंगल 01/12/2025      | गुरु 17/06/2026    | शनि 12/03/2027      | बुध 08/03/2028      | केतु 09/02/2029     |
| राहु 28/12/2025      | शनि 11/07/2026     | बुध 05/05/2027      | केतु 28/03/2028     | शुक्र 17/04/2029    |
| गुरु 21/01/2026      | बुध 01/08/2026     | केतु 28/05/2027     | शुक्र 23/05/2028    | सूर्य 08/05/2029    |
| शनि 19/02/2026       | केतु 10/08/2026    | शुक्र 30/07/2027    | सूर्य 09/06/2028    | चंद्र 10/06/2029    |
| बुध 17/03/2026       | शुक्र 04/09/2026   | सूर्य 19/08/2027    | चंद्र 08/07/2028    | मंगल 04/07/2029     |
| केतु 28/03/2026      | सूर्य 11/09/2026   | चंद्र 20/09/2027    | मंगल 28/07/2028     | राहु 03/09/2029     |
| शुक्र 27/04/2026     | चंद्र 23/09/2026   | मंगल 12/10/2027     | राहु 17/09/2028     | गुरु 27/10/2029     |
| <b>मंगल - बुध</b>    | <b>मंगल - केतु</b> | <b>मंगल - शुक्र</b> | <b>मंगल - सूर्य</b> | <b>मंगल - चंद्र</b> |
| <b>27/10/2029</b>    | <b>24/10/2030</b>  | <b>22/03/2031</b>   | <b>21/05/2032</b>   | <b>26/09/2032</b>   |
| <b>24/10/2030</b>    | <b>22/03/2031</b>  | <b>21/05/2032</b>   | <b>26/09/2032</b>   | <b>27/04/2033</b>   |
| बुध 17/12/2029       | केतु 02/11/2030    | शुक्र 01/06/2031    | सूर्य 28/05/2032    | चंद्र 14/10/2032    |
| केतु 07/01/2030      | शुक्र 26/11/2030   | सूर्य 22/06/2031    | चंद्र 07/06/2032    | मंगल 26/10/2032     |
| शुक्र 08/03/2030     | सूर्य 04/12/2030   | चंद्र 28/07/2031    | मंगल 15/06/2032     | राहु 27/11/2032     |
| सूर्य 27/03/2030     | चंद्र 16/12/2030   | मंगल 22/08/2031     | राहु 04/07/2032     | गुरु 26/12/2032     |
| चंद्र 26/04/2030     | मंगल 25/12/2030    | राहु 25/10/2031     | गुरु 21/07/2032     | शनि 28/01/2033      |
| मंगल 17/05/2030      | राहु 16/01/2031    | गुरु 20/12/2031     | शनि 10/08/2032      | बुध 27/02/2033      |
| राहु 10/07/2030      | गुरु 05/02/2031    | शनि 26/02/2032      | बुध 28/08/2032      | केतु 12/03/2033     |
| गुरु 28/08/2030      | शनि 01/03/2031     | बुध 26/04/2032      | केतु 05/09/2032     | शुक्र 16/04/2033    |
| शनि 24/10/2030       | बुध 22/03/2031     | केतु 21/05/2032     | शुक्र 26/09/2032    | सूर्य 27/04/2033    |
| <b>राहु - राहु</b>   | <b>राहु - गुरु</b> | <b>राहु - शनि</b>   | <b>राहु - बुध</b>   | <b>राहु - केतु</b>  |
| <b>27/04/2033</b>    | <b>08/01/2036</b>  | <b>03/06/2038</b>   | <b>09/04/2041</b>   | <b>27/10/2043</b>   |
| <b>08/01/2036</b>    | <b>03/06/2038</b>  | <b>09/04/2041</b>   | <b>27/10/2043</b>   | <b>14/11/2044</b>   |
| राहु 22/09/2033      | गुरु 04/05/2036    | शनि 15/11/2038      | बुध 19/08/2041      | केतु 19/11/2043     |
| गुरु 31/01/2034      | शनि 20/09/2036     | बुध 11/04/2039      | केतु 12/10/2041     | शुक्र 21/01/2044    |
| शनि 07/07/2034       | बुध 22/01/2037     | केतु 11/06/2039     | शुक्र 16/03/2042    | सूर्य 10/02/2044    |
| बुध 23/11/2034       | केतु 14/03/2037    | शुक्र 01/12/2039    | सूर्य 02/05/2042    | चंद्र 13/03/2044    |
| केतु 20/01/2035      | शुक्र 07/08/2037   | सूर्य 22/01/2040    | चंद्र 18/07/2042    | मंगल 04/04/2044     |
| शुक्र 03/07/2035     | सूर्य 20/09/2037   | चंद्र 18/04/2040    | मंगल 11/09/2042     | राहु 31/05/2044     |
| सूर्य 21/08/2035     | चंद्र 02/12/2037   | मंगल 18/06/2040     | राहु 28/01/2043     | गुरु 22/07/2044     |
| चंद्र 12/11/2035     | मंगल 22/01/2038    | राहु 21/11/2040     | गुरु 02/06/2043     | शनि 20/09/2044      |
| मंगल 08/01/2036      | राहु 03/06/2038    | गुरु 09/04/2041     | शनि 27/10/2043      | बुध 14/11/2044      |

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

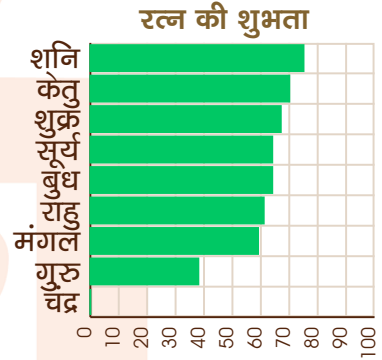
|              |                          |
|--------------|--------------------------|
| मूलांक       | 2                        |
| भाग्यांक     | 4                        |
| मित्र अंक    | 2, 7, 8, 4               |
| शत्रु अंक    | 5, 6                     |
| शुभ वर्ष     | 20,29,38,47,56           |
| शुभ दिन      | शुक्र, शनि, मंगल         |
| शुभ ग्रह     | शुक्र, शनि, मंगल         |
| मित्र राशि   | कर्क, धनु                |
| मित्र लग्न   | वृष, तुला, धनु           |
| अनुकूल देवता | हनुमान                   |
| शुभ रत्न     | नीलम                     |
| शुभ उपरत्न   | जमुनिया, बिलौर           |
| भाग्य रत्न   | हीरा                     |
| शुभ धातु     | लौह                      |
| शुभ रंग      | काला                     |
| शुभ दिशा     | पश्चिम                   |
| शुभ समय      | संध्या                   |
| दान पदार्थ   | कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह |
| दान अन्न     | उड़द                     |
| दान द्रव्य   | तेल                      |

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

| रत्न     | ग्रह  | शुभता | क्षेत्र                               |
|----------|-------|-------|---------------------------------------|
| नीलम     | शनि   | 75%   | धन, कम खर्च, स्वास्थ्य                |
| लहसुनिया | केतु  | 70%   | स्वास्थ्य, धन                         |
| हीरा     | शुक्र | 67%   | कम खर्च, सुख, भाग्योदय                |
| माणिक्य  | सूर्य | 64%   | व्यावसायिक उन्नति, दम्पति             |
| पन्ना    | बुध   | 64%   | धनार्जन, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव |
| गोमेद    | राहु  | 61%   | दम्पति, व्यावसायिक उन्नति             |
| मूंगा    | मंगल  | 59%   | कम खर्च, पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति   |
| पुखराज   | गुरु  | 38%   | व्यय, हानि, धन हानि                   |
| मोती     | चंद्र | 0%    | पराक्रम हानि, शत्रु व रोग             |



### दशानुसार रत्न विचार

| दशा   | समाप्ति    | माणिक्य | मोती | मूंगा | पन्ना | पुखराज | हीरा | नीलम | गोमेद | लहसुनिया |
|-------|------------|---------|------|-------|-------|--------|------|------|-------|----------|
| शुक्र | 27/04/2010 | 52%     | 0%   | 59%   | 70%   | 38%    | 80%  | 81%  | 67%   | 77%      |
| सूर्य | 27/04/2016 | 77%     | 12%  | 66%   | 64%   | 50%    | 55%  | 62%  | 47%   | 58%      |
| चंद्र | 27/04/2026 | 70%     | 25%  | 59%   | 70%   | 38%    | 67%  | 75%  | 47%   | 58%      |
| मंगल  | 27/04/2033 | 70%     | 12%  | 72%   | 52%   | 50%    | 67%  | 75%  | 47%   | 77%      |
| राहु  | 28/04/2051 | 52%     | 0%   | 44%   | 64%   | 38%    | 73%  | 81%  | 73%   | 58%      |
| गुरु  | 28/04/2067 | 70%     | 12%  | 66%   | 52%   | 56%    | 55%  | 75%  | 61%   | 70%      |
| शनि   | 27/04/2086 | 52%     | 0%   | 44%   | 70%   | 38%    | 73%  | 88%  | 67%   | 58%      |
| बुध   | 29/04/2103 | 70%     | 0%   | 59%   | 77%   | 38%    | 73%  | 75%  | 61%   | 70%      |
| केतु  | 28/04/2110 | 52%     | 0%   | 66%   | 64%   | 38%    | 73%  | 62%  | 47%   | 83%      |

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

|                        |                       |                       |                       |
|------------------------|-----------------------|-----------------------|-----------------------|
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया   | 11/12/1997-17/04/1998 | -----                 | -----                 |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 17/04/1998-07/06/2000 | -----                 | -----                 |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया   | 07/06/2000-23/07/2002 | 08/01/2003-07/04/2003 | -----                 |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया   | 06/09/2004-13/01/2005 | 26/05/2005-01/11/2006 | 10/01/2007-16/07/2007 |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया    | 02/11/2014-26/01/2017 | 21/06/2017-26/10/2017 | -----                 |

### द्वितीय चक्र:

|                        |                       |                       |                       |
|------------------------|-----------------------|-----------------------|-----------------------|
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया   | 29/03/2025-03/06/2027 | 20/10/2027-23/02/2028 | -----                 |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 03/06/2027-20/10/2027 | 23/02/2028-08/08/2029 | 05/10/2029-17/04/2030 |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया   | 08/08/2029-05/10/2029 | 17/04/2030-31/05/2032 | -----                 |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया   | 13/07/2034-27/08/2036 | -----                 | -----                 |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया    | 11/12/2043-23/06/2044 | 30/08/2044-08/12/2046 | -----                 |

### तृतीय चक्र:

|                        |                       |                       |                       |
|------------------------|-----------------------|-----------------------|-----------------------|
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया   | 14/05/2054-02/09/2054 | 05/02/2055-07/04/2057 | -----                 |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 07/04/2057-27/05/2059 | -----                 | -----                 |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया   | 27/05/2059-11/07/2061 | 13/02/2062-07/03/2062 | -----                 |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया   | 24/08/2063-06/02/2064 | 09/05/2064-13/10/2065 | 03/02/2066-03/07/2066 |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया    | 05/02/2073-31/03/2073 | 23/10/2073-16/01/2076 | 11/07/2076-11/10/2076 |

### शनि का ढैया फल

| ढैया के प्रकार         | फल  | क्षेत्र            |
|------------------------|-----|--------------------|
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया   | सम  | धन                 |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | सम  | पराक्रम हानि       |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया   | शुभ | सुख                |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया   | सम  | शत्रु से कष्ट      |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया    | सम  | व्यावसायिक परेशानी |

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति जन्म कुंडली में द्वादश भाव में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। परन्तु शास्त्रानुसार आपका मंगली दोष भंग हो रहा है। यह मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा स्वभाव व्ययशील होगा परन्तु अशुभ कार्यों की अपेक्षा शुभ कार्यों पर ही आप अधिकांश व्यय करेंगे। साथ ही जीवन में समस्त सांसारिक भोग्य पदार्थों का भी आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आनन्द पूर्वक आप दाम्पत्य जीवन को व्यतीत करेंगे।

यद्यपि यह मंगल आपके लिए शुभ फलदायक है। इसके प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब हो सकता है। परन्तु विवाह कार्य अत्यन्त ही शान्त एवं सुखद रूप से सम्पन्न होगा। इसमें किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही विवाह के पश्चात भी आपका दाम्पत्य जीवन सुखी एवं प्रेम पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में समस्त आवश्यक सुख संसाधनों तथा अन्य भौतिक सामग्री से सुसम्पन्न रहेंगे। आपका शत्रु पक्ष भी हमेशा कमजोर रहेगा अतः इनसे आपको किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होगी।

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल द्वादश भाव में स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप शुभ कार्यों पर व्यय करने में सर्वदा रुचिशील रहेंगे तथा समस्त भोग्य पदार्थों को अर्जित तथा उपभोग करने में सफल रहेंगे। इसकी तृतीय भाव पर दृष्टि से आपके पराक्रम में नित्य वृद्धि होगी तथा आप निर्भय होकर अपने समस्त कार्यों को सम्पन्न करेंगे। लोगों में अपना प्रभाव स्थापित करने में भी समर्थ रहेंगे। साथ ही भाई बहनों से भी आप युक्त रहेंगे। जीवन में उनसे वांछित सुख एवं सहयोग भी प्राप्त कर सकेंगे। षष्ठ भाव पर दृष्टि होने से शत्रु पक्ष प्रायः

निर्बल रहेगा। आपका विरोध करने में वे सर्वदा असमर्थ रहेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि भावी जीवन साथी के लिए शुभ ही रहेगी। इससे आपकी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भी समावेश होगा। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण समर्पण की भावना रहेगी तथा आपके परस्पर संबंध भी घनिष्ठ एवं प्रेम पूर्वक रहेंगे। अतः आपका दाम्पत्य जीवन अत्यन्त ही आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा एवं अनावश्यक व्यवधान तथा समस्याओं का प्रायः अभाव रहेगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक या ऐसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिसका मांगलिक दोष उचित रूप से भंग हो रहा हो। इस प्रकार यदि आप अपना दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करेंगे तो जीवन में सर्व सौभाग्य, धनैश्वर्य, मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त होकर समाज में पूर्ण यश प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

इसके अतिरिक्त जन्म कुण्डली मिलान के समय यदि कन्या के द्वादश भाव में मंगल हो तो आवश्यक होने पर ही विवाह करें क्योंकि समान भावों में मंगल होने से जीवन में यदा कदा अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होती रहेंगी जिससे दाम्पत्य जीवन में तनाव भी उत्पन्न हो सकता है। अन्य भावों में स्थित मंगल होने से दोष समाप्त हो जायेगा एवं जीवन सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। अतः अन्तिम निर्णय अत्यन्त ही सूझ बूझ से लेना चाहिए जिससे भावी दाम्पत्य जीवन में किसी भी प्रकार की समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- पंचम भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में बुध के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

## नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



## ग्रह फल

### सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

वृश्चिक राशि में रवि हो तो जातक साहसी, लोभी, चिकित्सक, लोकमान्य, क्रोधी उद्योगी, उदररोगी, पुलिस अधिकारी एवं सेना में उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

### चन्द्र

तृतीय, भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान, एवं कंजूस होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरु, यात्रा करने का शौकीन, आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील

रहेंगे।

### मंगल

बारहवें भाव में मंगल हो तो जातक नेत्ररोगी, स्त्रीनाशक, ऋणी, झगड़ालू, मूर्ख, व्ययशील एवं नीच प्रकृति का पापी होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराकमी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उनसे पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

### बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

धनु राशि में बुध हो तो जातक विद्वान्, समाज में सम्मानित, गुणी, सुगठित शरीर, अविवेकी, अच्छा संगठनकर्ता, चतुर, ईमानदार, उदार, प्रसिद्ध, राजमान्य, लेखक, सम्पादक एवं वक्ता होता है।

### गुरु

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

## शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, ध्यरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

## शनि

द्वितीय भाव में शनि हो तो जातक कटुभाषी, साधुद्वेषी, मुखरोगी, और कुम्भ या तुला का शनि हो तो धनी, लाभवान् एवं कुटुम्ब तथा भ्रातृवियोगी होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

## राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

सिंह राशि में राहु हो तो जातक चतुर, विचारक, सज्जन, नीति दक्ष एवं सत्पुरुष होता है।

## केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

कुम्भ राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, कर्णरोगी, भ्रमणशील, व्ययशील एवं साधारण धनी होता है।

## दशा विश्लेषण

**महादशा :- चन्द्र**  
**( 27/04/2016 - 27/04/2026 )**

चन्द्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह दशा 27/04/2016 को आरम्भ होगी और 27/04/2026 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्र तृतीय भाव में अवस्थित है जो मानसिक प्रवृत्ति, बुद्धि अध्ययन के प्रति झुकाव, साहस, आपके भाई-बहनों, अफवाहों, गले, हँसली, बाँहों और स्नायु तंत्र का प्रतिनिधित्व करता है।

दस वर्षों की इस अवधि में आपको शांति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी और ईश्वर में आपकी निष्ठा होगी।

**स्वास्थ्य :**

इस अवधि में आपको सुख और उत्तम जीवन की प्राप्ति होगी। आप स्फूर्ति का अनुभव करेंगे और अपने कर्तव्यों का पालन उत्तम ढंग से करेंगे। किसी बड़े रोग या दुर्घटना की सम्भावना नहीं है।

**अर्थ और सम्पत्ति :**

तृतीय भाव का स्वामी होने के कारण चन्द्र इस बात के संकेत देता है कि आपकी धर्म-कर्म में प्रवृत्ति होगी जिससे आपका जीवन सुखमय, अनुकूल तथा सुव्यवस्थित होगा। इस अवधि में आप बहुत अधिक धनोपार्जन करेंगे और अपनी सम्पत्ति और बैंक बैलेंस में वृद्धि करेंगे। अगर व्यवसायी हैं तो नया व्यवसाय आरम्भ करेंगे और अगर सेवारत हैं तो आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए नये मार्गों की खोज में रहेंगे जिसके लिए आप यात्राओं पर भी जा सकते हैं।

**व्यवसाय :**

आप अपनी व्यावसायिक स्थिति में सुधार के लिए यात्राओं पर जा सकते हैं क्योंकि आप सक्रिय, यात्रा-प्रिय तथा बहादुर हैं। व्यवसाय में सुधार के लिए किसी कार्य का अवसर भी प्राप्त हो सकता है। आपके मस्तिष्क में नये विचार उभरेंगे जिनकी सामाजिक और व्यवसाय के क्षेत्र में सराहना होगी और वे जीवन की उन्नति और अच्छे कार्य के लिए प्रेरित करेंगे।

**पारिवारिक जीवन :**

आपका पारिवारिक जीवन पूर्ण अनुकूल तथा सौहार्दपूर्ण रहेगा क्योंकि आपकी जन्मकुण्डली में चन्द्र की आपके पिता के भाव अर्थात् नवम भाव पर दृष्टि है। पिता के साथ संबंधों में सुधार होगा और दैनिक और व्यावसायिक कार्यों में आपकी बहुत मदद करेंगे। आपको माता से कुछ प्राप्त होने के संकेत हैं। आपके भाई-बहनों के साथ आपके संबंध सौहार्दपूर्ण रहेंगे। आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी होंगे और कुल मिलाकर पारिवारिक वातावरण तथा जीवन संतोषजनक रहेंगे।

शिक्षा पशिक्षण :

जीवन में नये विषयों के अध्ययन के लिए यह अवधि उत्तम सिद्ध होगी अध्ययन जारी रखने में आपकी रुचि होगी और आप अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सफल होंगे ।



**महादशा :- मंगल**  
**( 27/04/2026 - 27/04/2033 )**

मंगल की महादशा 27/04/2026 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 27/04/2033 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल बारहवें भाव में स्थित है। मंगल की दृष्टि छठे, सातवें तथा तीसरे भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्रदशा चल रही थी। आपकी छोटी यात्राएँ हुई होंगी और आपको बौद्धिक कार्यों में सफलता तथा भाई-बहनों से सुख मिला होगा। इस दशा के दौरान व्यय, यात्रा तथा आध्यात्मिक कार्यों में वृद्धि हो सकती है।

**स्वास्थ्य :**

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी। किन्तु आपको मामूली चोटों और आँख की समस्याओं के प्रति सावधानी बरतनी होगी। आपके पैरों तथा टखनों में पीड़ा हो सकती है। कुछ मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य सामान्यतया उत्तम रहेगा।

**अर्थ और व्यवसाय :**

धन संचय में आपको कुछ समस्या हो सकती है किन्तु, आपकी आय आपके व्यय से कम नहीं होगी और आपके उपर ऋण नहीं होगा। छठे भाव पर मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप आपको विपक्षियों-विरोधियों पर विजय मिल सकती है और उनसे लाभ हो सकता है। जीविका के लिये सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी के कार्य या लोहा-इस्पात से संबद्ध व्यवसाय का चयन कर सकते हैं। लोहा और इस्पात, सर्जरी, अस्पताल प्रशासन या परोपकारी संस्था से

संबद्ध व्यवसाय लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों के कार्यों में परिवर्तन और साझेदारों से लाभ हो सकता है और आप करार तथा अनुबन्ध कर सकते हैं। आपका स्थानान्तरण हो सकता है। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ सकता है। सफलता वाधित हो सकती है, व्यापार में उथल-पुथल हो सकती है किन्तु दशा की प्रगति के साथ इसमें सुधार हो सकता है।

**वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :**

आपको वाहन सुख मिल सकता है। यात्रा की सम्भावना है और आप व्यापार के सिलसिले में विदेश भी जा सकते हैं। यात्राएं आखिर में लाभदायक सिद्ध होंगी। ऐसा मंगल की अन्तर्दशा में होगा। जमीन-जायदाद के मामलों के लिए यह दशा उत्तम होगी। इस दशा के दौरान सम्पत्ति का लेन-देन हो सकता है।

**शिक्षा :**

आपको अपनी श्रेणी बरकरार रखने के लिये कठिन परिश्रम करना होगा। किन्तु आप दृढ़संकल्प के साथ अच्छा करेंगे। आपके पाठ्यक्रम में कुछ परिवर्तन हो सकता है। यदि आप शोध-परियोजनाओं से सम्बद्ध हैं तो इस दशा में, और खासकर बुध और मंगल की अन्तर्दशा में, अच्छा करेंगे। आपके लिये गणित, तर्कशास्त्र, विधि तथा गूढ़ विषयों का अध्ययन लाभदायक हो सकता है। आपको विरोधियों व प्रतिस्पर्धियों पर विजय मिल सकती है। आपकी धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन में रुची होगी।

**परिवार :**

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। बच्चों से अस्थायी रूप से दूर हो सकते हैं। उन्हें अध्ययन कार्यों के सिलसिले में घर छोड़ना पड़ सकता है। आपके जीवन साथी में बाधाओं का सामना करने की पर्याप्त क्षमता होगी। आपके जीवन साथी के साथ सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपकी माता के लिए समय समृद्धिदायक रहेगा, उनकी यात्रा हो सकती है और आपके उनके साथ सम्बन्ध सुन्दर रहेंगे। आपके पिता की अचल सम्पत्ति और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के व्यवसाय में उन्नति होगी और बड़ों के लिए समय लाभदायक रहेगा। आपके उनके साथ सम्बन्ध बहुत अच्छे रहेंगे। आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी और इस दशा के दौरान आप उनसे सम्पर्क बनाये रहेंगे।

**अन्तर्दशा :**

मंगल की दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी यात्रा और व्यय हो सकता है। राहु कुछ समस्याएँ उत्पन्न कर सकता है जबकि गुरु की अन्तर्दशा में लाभ किन्तु स्वास्थ्य कुछ खराब रहेगा। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप व्यवसाय में प्रगति होगी जबकि बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी शिक्षा उत्तम होगी और निवेश तथा सद्म सफल रहेगा। केतु के कारण कुछ मानसिक तनाव हो सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और धन तथा सुख की प्राप्ति होगी। आगे सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का आराम तथा माता से लाभ मिलेगा जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको छोटे भाई-बहनों से सुख मिलेगा तथा यात्राएं होंगी।

**अंतर्दशा :- मंगल - मंगल  
( 27/04/2026 - 23/09/2026 )**

आपके लिए मंगल की महादशा 27/04/2026 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 27/04/2026 को प्रारंभ होकर 23/09/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपको आर्थिक नुकसान से बचने के लिए सावधान रहना चाहिए। आपकी बहुत सी यात्राएं हो सकती हैं जिनमें कुछ व्यर्थ हो सकती हैं। सामुदायिक स्वास्थ्य विभाग में काम करने करने वाले लाभान्वित होंगे। लाभदायक अनुबंध या समझौता संभव है। जीवनसाथी से कुछ मनमुटाव हो सकता है। भाइयों के साथ संबंध मधुर रहेंगे। अध्यात्म में रुचि होगी।

जीवनसाथी को मामूली व्याधि हो सकती है पर वे प्रतिस्पर्धियों और विरोधियों पर विजय प्राप्त करेंगे। आपके पिता अचल संपत्ति खरीद सकते हैं या वर्तमान जायदाद में मरम्मत आदि करवा सकते हैं। माता सौभाग्यशाली रहेंगी; उनकी कुछ यात्राएं हो सकती हैं। आपके छोटे भाई-बहन कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे।

आपकी संतान की शिक्षा या कार्यक्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है। अगर आप सेवारत हैं तो अनुबंध हो सकते हैं। व्यापारीगण और परामर्शदातओं को लक्ष्य प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना होगा।

नेत्र, पैर के रोग, पित्तविकार से सावधान रहें। अरिष्ट से बचाव के लिए शिवजी की आराधना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - राहु  
( 23/09/2026 - 12/10/2027 )**

आपके लिए मंगल की महादशा 27/04/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 23/09/2026 को प्रारंभ होकर 12/10/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आपके विदेशियों से व्यापारिक संबंध बन सकते हैं। शत्रुओं पर विजय होगी। विपरीत लिंग के लोगों से लाभ हो सकता है। जनसंपर्क बढ़ेगा। विवाह हो सकता है। विवाह से धनलाभ होगा। जीवन में खूब तरक्की होगी। आप साहसी और तीव्रता से निर्णय लेने वाले होंगे। सम्मान और उच्चपद का संकेत है।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे। आपके पिता धनार्जन करेंगे। माता अचल संपत्ति प्राप्त करेंगी; उनके धन में वृद्धि होगी। आपके भाई-बहन निवेश और सट्टेबाजी से लाभ कमा सकते हैं।

आपकी संतान को परिश्रम करना होगा। उन्हें कार्यों में सफलता मिलेगी। अगर से कार्यरत हैं तो खूब धन कमाएंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाता तरक्की करेंगे। व्यापारी धनी बनेंगे और अनुबंधों पर हस्ताक्षर करेंगे।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ॐ रां राहवे नमः

### **अंतर्दशा :- मंगल - गुरु ( 12/10/2027 - 17/09/2028 )**

आपकी मंगल की महादशा 27/04/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 12/10/2027 को प्रारंभ होकर 17/09/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आपके शत्रु परास्त होंगे। खर्चे बढ़ सकते हैं। धार्मिक स्थलों की यात्रा होगी। स्पर्धियों पर विजय होगी; मातहतों और किरायेदारों से लाभ होगा। रोजगार के नये अवसर मिलेंगे, कार्यालय में सुविधाएं बढ़ेंगी। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी; अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। अच्छे मित्र बनेंगे। अचानक धन प्राप्त हो सकता है। जीवनसाथी को चुनाव या स्पर्धा में विजय मिलेगी। आपके पिता अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे; उन्हें घरेलू सुख मिलेगा। माता की लंबी यात्रा हो सकती है; खर्चे बढ़ सकते हैं।

आपके भाई-बहन कार्यक्षेत्र में तरक्की करेंगे। आपकी संतान की शिक्षा पूर्ण हो सकती है; उन्हें अप्रत्याशित लाभ हो सकता है, स्थान में परिवर्तन संभव है।

अगर आप सेवारत हैं तो किसी समझौते पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। परामर्शदाताओं की लघु यात्राएं और मामूली परिवर्तन हो सकते हैं। व्यापारी स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा मगर आंखों और पैरों का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीले वस्त्र और हल्दी का दान करें।

### **अंतर्दशा :- मंगल - शनि ( 17/09/2028 - 27/10/2029 )**

आपके लिए मंगल की महादशा 27/04/2026 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 17/09/2028 को प्रारंभ होकर 27/10/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आर्थिक मामलों में उतार-चढ़ाव आ सकते हैं, मगर धन के स्तर में स्थायित्व आएगा। सुख-सुविधाएं प्राप्त होंगी, मगर कुछ बाधाएं आ सकती हैं। प्रशासनिक क्षमता उत्तम रहेगी। पराविद्या में रुचि हो सकती है। जीवनसाथी के माध्यम से धनलाभ हो सकता है। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। व्यापार में लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी के जीवन में अचानक परिवर्तन आ सकते हैं। आपके पिता प्रतिद्वंद्वियों पर विजयी होंगे। माता धनी बनेंगी। भाई-बहनों को कार्यक्षेत्र में निराशा हो सकती है मगर वे बाधाओं को पार कर लेंगे, अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, स्थिति में सुधार होगा।

आपकी संतान को कठोर परिश्रम करना होगा। अगर वे सेवारत हैं तो धनार्जन करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है, लाभ होगा। परामर्शदाता अतीत में किये अचल संपत्ति में निवेश से लाभान्वित होंगे। व्यापार में उतार-चढ़ाव आ सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। दांत और नेत्र का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार को उपवास करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - बुध  
( 27/10/2029 - 24/10/2030 )**

आपके लिए मंगल की महादशा 27/04/2026 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 27/10/2029 को प्रारंभ होकर 24/10/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आपको मित्रों से खुशी और सहायता मिलेगी। लोकप्रियता बढ़ेगी। विभिन्न माध्यमों से धन आएगा। आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। संतान सुखकारी रहेगी। शत्रु परास्त होंगे। हर प्रकार की सुविधा उपलब्ध रहेगी। सर्जनात्मक शक्ति और कल्पना उत्तम रहेंगी। निवेश से लाभ हो सकता है। संतान का जन्म संभव है। कला, नाटक, खेलकूद आदि में भाग ले सकते हैं।

आपके जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी; निवेश अधिक करेंगे। पिता की लघु यात्राएं हो सकती हैं; जनता से संपर्क बढ़ेगा। माता को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है ; अध्यात्म में रुचि बढ़ेगी, कुछ परिवर्तन संभव है।

भाई-बहनों की यात्राएं हो सकती हैं; उच्चशिक्षा और समृद्धि का संकेत है।

आपकी संतान को साझेदारों से लाभ होगा, व्यापार में धन कमा सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा; उच्चाधिकारी प्रसन्न होंगे। परामर्शदाता और व्यापारी धन कमाएंगे।

कान और शरीर के निचले भागों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए हरी मूंग की दाल का दान करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - केतु  
( 24/10/2030 - 22/03/2031 )**

आपके लिए मंगल की महादशा 27/04/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 24/10/2030 को प्रारंभ होकर 22/03/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में आप उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं। मानसिक शांति, प्रसिद्धि और धनलाभ का योग है। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। घरेलू सुख मिलेगा, संतान से खुशी मिलेगी। आप स्वभाव से मददगार हैं। किसी फैसले को करने से पहले गहन विश्लेषण करते हैं। आप साहस का परिचय देंगे। लाभकारी यात्राएं हो सकती हैं। व्यापार में लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपकी माता की तीर्थयात्रा हो सकती है; उन्हें कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके भाई-बहनों के सम्मान में वृद्धि होगी। उन्हें सफलता और समृद्धि मिलेगी, बाधाओं को पार करेंगे।

आपकी संतान के पिता के साथ मधुर संबंध रहेंगे। अगर वे सेवारत हैं तो यात्रा हो सकती है; भाग्यशाली रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकते हैं; अप्रत्याशित धन मिल सकता है। परामर्शदाता स्पर्धियों पर विजयी होंगे; सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। व्यापारी धन कमाएंगे।

उदर रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार और मंगलवार को उपवास करें।